नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

ज्ञान शांति मैत्री

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

'मध्य भारत में देशज संस्कृति, भाषा एवं जेंडर के प्रश्न' पर हिंदी विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

महिला अध्ययन को व्यापकता देने की जरूरत - प्रो. निर्मला जैन

वर्धा, 31 मार्च 2016: महिला अध्ययन एक व्यापक विषय है और इस विषय को साहसिकता के साथ संतुलन बिठाकर अध्ययन-अध्यापन की आवश्यकता है। महिला और पुरुष इन दोनों की समस्याओं के बारे में विचार कर इस विषय की द्विपक्षीयता पर भी सोचा जाना चाहिए। उक्ताशय के विचार सुविख्यात आलोचक प्रो. निर्मला जैन ने व्यक्त किये। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में 'मध्य भारत में देशज संस्कृति, भाषा एवं जेंडर के प्रश्न' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन गुरुवार, 31 मार्च को हुआ। इस अवसर पर प्रो. जैन बतौर मुख्य अतिथि बोल रही थी। समापन समारोह की अध्यक्षता कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की।

विश्वविद्यालय का स्त्री अध्ययन विभाग एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हबीब तनवीर सभागार में हुआ। समारोह में मंच पर स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी अध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक, सहायक प्रोफेसर तथा संगोष्ठी संयोजक डॉ. अवंतिका शुक्ला उपस्थित थी। प्रारंभ में कुलपति प्रो. मिश्र ने प्रो. निर्मला जैन का चरखा और खादी-माला प्रदान कर स्वागत किया।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि संगोष्ठी का विषय विविधता को

रेखांकित करने वाला है और विगत तीन दिनों में इस विषय को लेकर देश के विभिन्न कोनों से आए विशेषज्ञों और वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किए है। उन्होंने माना कि हर संस्कृति देशज होती है। हमें चाहिए कि देश की भिन्नताओं को साथ लाकर उसे शोध का विषय बनाएं और उसके आशय की पहचान कर मुख्यधारा और देशज का अध्ययन करें। उन्होंने कहा कि स्थानीय संसाधनों पर जीवन बिताने वाले एक तरह तो विकास की कीमत चुकाकर विकसित होने वाले व्यक्ति, समुदाय और समाज दूसरी तरफ हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में विकास की व्याख्या ही बदल गयी है और संहार ही विकास का पैमाना बन रहा है। भारतीय समाज और रिश्तों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि हमारा समाज रिश्तों के जाल में रहकर जीता है और वह समूह का प्रतिनिधि भी होता है। एक-दूसरें पर निर्भर रहना हमारी संस्कृति का एक अहम हिस्सा है। इस अवसर पर कुलपति प्रो. मिश्र और प्रो. निर्मला जैन द्वारा संगोष्ठी में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. अवंतिका शुक्ला ने किया तथा आभार डॉ. सुप्रिया पाठक ने माना। संगोष्ठी का प्रतिवेदन रेणु कुमारी, शिवानी, रजनीश अंबेडकर, आरती कुमारी, चित्रलेखा अंशु तथा ज्योति ने प्रस्तुत किया। समापन कार्यक्रम में प्रो. मनोज कुमार, प्रो. देवराज, डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, डॉ. रवि कुमार, डॉ. मिथिलेश, प्रा. राजेंद्र मुंढे, डॉ. शंभू जोशी, डॉ. हरप्रीत कौर, उमाकांत चौबे, शिवसिंह बघेल, सुरभि विप्लव, बी. एस. मिरगे आदि सहित प्रतिभागी, शोधार्थी, विद्यार्थी प्रमुखता से उपस्थित थे।